अभिनंदन ग्रन्थ

श्री लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र'

सम्पादक

जर्नलिस्ट प्रशान्त मिश्र

लाखन सिंह भदौरिया 'सौमित्र'
लाखन, लाखन में एक हैं.....

पवन कुमार I.A.S.
मैनपुरी

''ऐसा ही मेरा लाखन लाखन में एक है.....

उपरोक्त पंक्ति हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि कुँवर हरिश्चन्द देव 'चातक' जी ने मुक्तक सम्राट लाखन सिंह भदौरिया ''सौमित्र'' जी के विषय में कभी व्यक्त की थीं। ये पंक्तियाँ आज भी उतनी ही सच और प्रासंगिक हैं जितनी कि तब थीं। उनके द्वारा लिखे हुए मुक्तक अत्यंत भावपूर्ण हैं। उनके मुक्तकों में ऐसी उस्तादी झलकती है कि जो देखते ही बनती है। यह सौभाग्य है कि भदौरिया जी मैनपुरी के हैं। विद्वान मानते हैं कि जैसे मुक्तक भदौरिया जी ने लिखे हैं वैसे मुक्तक तो कोई नहीं लिख सकता।

लाखन सिंह भदौरिया जी को अल्पकाल में ही कवि के रूप में पहचान मिल गई। जल्दी ही भदौरिया जी पूरे उत्तर भारत के कवि सम्मेलनों की शोभा बन गए। वे कवि सम्मेलनों की गरिमा बढ़ाने वाले कवियों में से थे, जो एकदम सीधे सहज ढँग से कविताएँ पढ़ते थे और धीरे-धीरे बहती अपनी अमृतमयी काव्यधारा से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते थे। उनके सुमधुर गीत और मुक्तक सहृदय श्रोताओं को अंतर्मन से अपने साथ जोड़ते। ''सौमित्र'' जी एकदम खुद में डूबे हुए इंसान हैं। सच तो यह है कि वे इंसान पहले हैं कवि बाद में। शायद इसीलिए उनके मुक्तकों में इंसानियत की खुशबू उन्मुक्त भाव से उड़ती रहती है। उनका व्यक्तित्व कवि सम्मेलनों में अत्यंत प्रभावी तरीके से उद्घाटित होता है। एक बार जब ''सौमित्र'' जी कविता पाठ के लिए आमंत्रित किये जाते हैं, तो पूरे भाव के साथ किसी दरवेश की तरह ऐसी बेफिक्री से वे मुक्तक पढ़ते हैं कि लगता है कि वे इस दुनिया में नहीं बल्कि किसी और फलक से अपनी उपस्थिति दर्शा रहे हों। जब वे सुनाना शुरू करते हैं तो जैसे मुक्तकों की झड़ी लग जाती है। एक के बाद एक। उनके कविता पढ़ने का ढंग इतना सीधा-सरल होता है कि वे यह परवाह ही नहीं करते कि कोई सुन रहा है कि नहीं। ये तो श्रोतागण ही होते हैं जो उनके कवि प्रवाह में डूबते और उतराते रहते हैं।

भदौरिया जी सच्चे कवि हैं, जो लिखते हैं वो जीते हैं। वो पूरी नेक नियति और सरलता के साथ अपना लेखन कार्य करते हैं। भदौरिया जी उन कवियों में से हैं, जिन्हें सिद्ध कवि कहा जा सकता है। उनकी कविताओं के बारे में उनके समकालीन भी लोहा मानते हैं, वह चाहे विषय वस्तु हो अथवा भाषा।

''सौमित्र'' जी की कविताओं में ऐसा भाव प्रकट होता है कि श्रोता बिना प्रंशसा किए नहीं रह सकते। ''सौमित्र'' जी के विषय में कहा जा सकता है कि उन्होंने एक संत सरीखा जीवन जिया है। वे समदर्शिता का भाव सँजोकर चलने वाला, सबको प्यार लुटाने वाला, प्राणि मात्र के दुख से द्रवित होने वाला कवि कबीर की भांति अपनी रचना धर्मिता में लगे हुए हैं। उनकी कविता यात्रा के विषय में कहा जा सकता है कि १९५० ई. से चार-चार पंक्तियों में उन्होने मुक्तक कहने प्रारंभ किये तब से आज तक उनकी यह रचना धर्मिता सतत रूप से चली आ रही है।

भदौरिया जी की हिन्दी के प्रति निष्ठा का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने अपना पूरा जीवन ही हिन्दी के नवोत्थान में समर्पित करने का संकल्प कर लिया। जो हर किसी को आत्मिक शांति और सुकून देता था। कहना न होगा कि भदौरिया जी की कविताई की सफलता और चिर सिद्धता भी इसी में है। उनके मुक्तकों को मुक्त रूप से कई जगह उद्धृत किया जाता है –

अंधकार में उदित सूर्य-सी कविता क्रांति बिखेरी, अवरोधों की अनी पराजित, निज प्रतिभा से फेरी,
संघर्षों से झुका न जिसका पौरुष महाप्रबल था, अंतस में अमृत हिलोर थी, दृग में गंगाजल था।

भदौरिया जी का एक और गीत बगैर उपदेशात्मकता के बड़े बेमालूम ढंग से हमें भीतर से जगाता है और जागना भी जरूरी है, इसलिए कि–

अगर हम समय से नहीं जाग पाए, किरन क्या कहेगी, गगन क्या कहेगा?
नए सूर्य की रोशनी रो उठेगी अगर प्रात अँगड़ाइयों में बिताई,
सबेरा कहाँ फिर सबेरा रहेगा अगर प्रात जमुहाइयों में बिताई
धरा की उदासी नहीं तोड़ पाए, कली क्या कहेगी, सुमन क्या कहेगा?

विभिन्न महान मनस्वियों पर सौमित्र जी ने बहुत ही प्रभावी ढंग से कविताएँ लिखी हैं। इसी क्रम में उन्होंने स्वामी दयानन्द के प्राणोत्सर्ग पर भी अत्यंत मार्मिक कविता लिखी है –

एक दीप बुझ गया इसी दिन अनगिन दीप जलाकर। वह प्रकाश लेकर आया था, अंधकार कैसे रह पाता।
ऐसा वैसा दीन न था जो एक झकोरे में बुझ जाता, झंझानिल भी मुग्ध रह गया, जिसकी दीपित ज्योति शिक्षा पर,
एक दीप बुझ गया इसी दिन अनगिन दीप जलाकर .....

सौमित्र जी के इस मुक्तक को पढिये तो उनके अनुभवों को समझा जा सकता है –

साधना-शिल्पी स्वयं को गढ़ रहे हैं। पाँव धीमे हैं मगर हम बढ़ रहे हैं।
थरथराती पिंडलियाँ दुर्बल नहीं है। हम रपटती सीढ़ियों पर चढ़ रहे हैं।

सौमित्र जी का एक और मुक्तक मैं यहाँ उद्धृत करना चाहूँगा जिसमें रस भी हे और प्रेम भी –

मन किसी का तोड़ मत, तू टूटकर रसखान बन सिर्फ पाहन बन रहा, अब आदमी इनसान बन,
भाव से छलके हृदय का प्यार दे यदि से सके मत अहं की ऐंठ में अकड़ा हुआ भगवान बन।

सच तो यह है कि लाखनसिंह भदौरिया 'सौमित्र' उन बिरले कवियों में से हैं, जिनका होना साहित्य में एक आश्वस्ति की तरह है। उनका लेखन इस बात का प्रमाण है कि अभी साहित्य मानवीय सरोकारों से बंधा हुआ है। भदौरिया जी शतायु हों ऐसी मेरी शुभकामनाएँ हैं।

दर्द जब नाराज होता है मोम सा पाहन पिघलता है
जिन्दगी जब प्यार देती है आदमी गिरकर संभलता है
पीढ़ियाँ पथ देखतीं जिसके उजाले में युगों तक अन्धतम में
प्रीति की लौ जगमगाती आँधियों में आँसुओं का दीप जलता है ।